

# हिंसा : आतंकवाद की अभिव्यक्ति

डॉ. एम. डी. थॉमस

हिंसा का मूल 'हिंस' है, जिसका अर्थ है मारना। जीव की हत्या करना या उसे किसी प्रकार की हानि या कष्ट पहुँचाना उसका अनिष्ट करना, उसे सताना आदि हिंसा हैं। किसी के शरीर को मारना ही हिंसा नहीं होती। किसी के भाव को कुचलना, किसी के विचारों को दबाना, किसी के साथ कठोर व्यवहार करना, किसी के साथ ईष्या-द्वेष करना, किसी के साथ क्रूर व्यवहार करना, किसी को डराना-धमकाना — यह सब हिंसा के भिन्न-भिन्न रूप हैं। दूसरे पर किसी भी प्रकार का प्रहार हिंसा है। दूसरे की स्वतंत्रता का हनन, अर्थात् बोलने, लिखने, करने, असहमत होने आदि भी, हिंसा है। दूसरे पर अपना मत थोपने, उसे किसी भी प्रकार का शिकार बनाने, उसे अपने अधीन बनाने तथा उसके मौलिक अधिकारों में दखलंदाजी करने की कोशिश भी हिंसा है। स्वतंत्रता का समर्थन करने वाले किसी भी मूल्य को अस्त-व्यस्त करना हिंसा ही मानी जाएगी। हिंसा किसी-न-किसी प्रकार से बल का प्रयोग है।

हिंसा पशुता की विरासत है। यह पशु के लिए स्वाभाविक है। यह पशु से मिला हुआ संस्कार है। यह मनुष्य की विकसित चेतना पर कलंक है और उसकी विकासशील चेतना को रोकती है। हिंसा पशु के लिए प्रवृत्ति है और मनुष्य के लिए विकृति। यह मनुष्य के जीवाणु में पठा हुआ पाशविक अतीत है, जो कि उसकी अवचेतन का हिस्सा बन गया है। पशु की हिंसा उसकी नैसर्गिक वृत्ति के अनुसार होने पर भी वह अपनी जाति में हिंसा नहीं करता। लेकिन, अपनी विशिष्ट बद्धि के बावजूद मनुष्य अपनी जाति में ही नहीं, कभी दूसरों को पीड़ित करने का रस लेते हुए भी हिंसा करता है। जब तक मनुष्य हिंसा की भावना से भरा है, वह असल में पशु ही है। मनुष्य तब तक मनुष्य नहीं बन पाएगा जब तक वह अपने भीतर के हिंसा-भाव से मुक्त न हो जाए।

हिंसा आत्महिंसा का विकास है। वह इन्सान के अपने भीतरी संघर्ष की अभिव्यक्ति है। हिंसा जब लड़ाई के रूप में व्यक्त होती है तब उसका अलग-अलग मकसद है। कोई धन के लिए, कोई यश के लिए और कोई पद के लिए लड़ता है, कोई खेल में लड़ता है, तो कोई अकारण भी। अपना बाहरी रूप कुछ भी हो, हिंसा पहले स्वयं पर वार करती है। हिंसा का जड़ अहंकार है। जो भी 'म' नहीं है उसे अपना दुश्मन समझाकर खत्म करने की सनक इसकी धुन है। यह अपने अन्तर्द्वन्द्व से पलायन करने का मानसिक चाल है। हिंसा रोगी मन की सक्रिय दशा है। जो भीतर से दुःखी है, वह दूसरे को सुखी देखना बदाशत नहीं कर सकता। हिंसा दुःखी 'म' का फैलाव है। वह मनुष्य के भीतर भरे हुए विष का रेचन है। यह मन में खौलते हुए दुभावों का निकास है। हिंसा भीतरी घूटन की बकाबू स्थिति है। कोई भी स्वयं को मारकर ही दूसरों को मार सकता है। अपने टूटे-बिखरे हुए मन की पीड़ा को दूसरों पर प्रक्षीपित करना ही हिंसा है। हिंसा मझाये हुए मन के द्वारा खेला जा रही आँख-मिचौनी मात्र है।

हिंसा कमजोरी का प्रच्छन्न रूप है। इन्सान अपने में जो कमो पाता है, उसकी पति के लिए कुछ इंजाद किया करता है। दृष्टिहीनों का कुशल कलाकार होना और कुरूपों का बहुत वाचाल होना इस बात को प्रमाणित करते हैं। जो हीनता की भावना से पीड़ित है, वह अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा किया करता है। कमो की परिपूरव की यह खोज एक आम बात है। हिंसा कमजोरी की परिपति है। पशु के पास अपनी रक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र के रूप में नाखून, सींग और दाँत हैं। आदमो को उसके स्थान पर छुरी-तलवार की जरूरत पड़ती है। इन्सान पशु की तुलना में शरीर और मन में बहुत संवेदनशील हैं। इसके अलावा, जो उसकी समझा से परे है उसको लेकर उसमें भय होता है। वह भय ही इन्सान की सबसे बड़ी कमजोरी है। हिंसा की बनियाद इसी में निहित है। जो सबसे अधिक हिंसक है वह भीतर से सबसे अधिक कमजोर है। उल्टा भी, जो सबसे कम हिंसक है वह सबसे अधिक शक्तिशाली है। हिंसा बटे हुए मन का नतीजा है। खण्डित मन बिखरा हुआ है। खण्डों की आपसी लड़ाई मन को बरी तरह से दुर्बल कर देती है और उसी दुर्बलता में हिंसा की भावना पनपती है। यद्यपि बदले की प्रक्रिया अपने आप से है, तथापि उसकी अभिव्यक्ति दूसरे की तरफ हो जाती है।

हिंसा का हमराही है क्रोध! क्रोध के बिना हिंसा नहीं हो सकती। हिंसा के बिना क्रोध भी रह नहीं सकता। दोनों आपस में एक दूसरे के प्रक हैं और उनका काय अवसर सामिलित रूप से सम्पन्न होता है। मनुष्य के जीवाणुओं में हिंसा की प्रवृत्ति पशुओं की विरासत के रूप में पायी जाती है। उसकी मानसिक-शारीरिक ग्रन्थियों में जहर-सा इकट्ठा हुआ क्रोध वह निकलने के बहाने की ताकत में रहता है। मौका पाकर जब वह व्यक्त होता है उसमें एसी ताकत रहती है जो अन्यथा असम्भव काम करवाने लायक है। क्रोध एक नशा है। यह एक अस्थायी पागलपन है। इसके हावी हो जाने पर कोई एसा काम कर डालता है, जिसे वह करना नहीं चाहता। क्रोधावेश में जो होता है उसके परिणाम का निवारण भी नहीं हो सकता।

हिंसा भीतरी मृत्यु का द्वन्द्व है। ज़िन्दगी में जीने-मरने दोनों प्रकार की इच्छाएं रहती है। जीने की इच्छा सकारात्मक ऊजाओं पर आधारित है। जबकि मरने की इच्छा नकारात्मक ऊजाओं के कारण है। एक तरफ जहाँ प्रकाश है, सत्य है, शान्ति है, अहिंसा है, विनम्रता है, हृदयशीलता है, जिजीविशा है, जिज्ञासा है, जीवन है, दूसरी तरफ अन्धेरा है, असत्य है, अशान्ति है, घमण्ड है, उग्रता है, निराशा है, असफलता है, हिंसा है, मौत है। इन दोनों छोरों के बीच विरोध का भाव रहता है। इनके आपसी तनाव में सन्तुलन बनाये रखना ही वास्तव में ज़िन्दगी है। ये सिराएँ एक गाड़ी के दो चक्के वे समान आपस में प्रक भी हैं। लेकिन, हिंसा में प्रकता का सन्तुलन बिगड़ जाता है और मौत की वासना 'मं जीना नहीं चाहता' इस भाव से जीवन की प्रक्रिया पर उल्टा प्रभाव जमाता है। यह भीतरी लड़ाई दूसरे के प्रति हिंसा के रूप में आरोपित हो जाती है। इस विरोधाभासी खेल में हिंसा-तंत्र में विद्यमान भयंकर मानसिक त्रासदी का खुलासा होता है।

हिंसा विकास का उल्लंघन है। आगे बढ़ना विकास का भाव है। जो कल था, आज भी यह वही है तो आज व्यर्थ गया। आगे बढ़ने के लिए बोते हुए कल को छोड़ना होगा, वर्तमान में आना होगा, भविष्योन्मुख होना होगा। विकास के लिए कल का अतिक्रमण करना होगा, अतीत के प्रति मरना चाहिए। लेकिन, हिंसा में 'नहीं' करने का भाव है। नया पाने के लिए पुराना खोना जरूरी है। हिंसा भविष्य को रोकती है, नष्ट करती है। अतीत तो खत्म हो ही गया। वर्तमान भी हाथ से यों ही छूट जाता है। अथात्, हिंसा में अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों एक साथ तहस-नहस होते हैं। इसलिए हिंसा में मानवीय विकास नाममकिन होता है।

हिंसा आतंकवाद का मृत रूप है। यह उसका हथियार है, उसकी अभिव्यक्ति है। इसमें दया, उदारता, प्रेम आदि कोमल गुणों या मानवोचित विशेषताओं का पूर्ण अभाव है। इसमें कठोरता है, उग्रता है, उद्वेगता है, कट्टरता है, क्रूरता है और हमशा लड़ने की तत्परता है। दूसरों का हनन करना, उन्हें कष्ट पहुँचाना, उनको नष्ट करना इसका ध्येय है। हिंसा का एसा चरित्र इन्सानियत के लिए सदैव खतरा है तथा वह पणतया आतंकवादी है।

---

डॉ. एम. डी. थॉमस

संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली

प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)

ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)

वेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: <https://twitter.com/mdthomas53>

Facebook: <https://www.facebook.com/mdthomas53>

Academia.edu: <https://independent.academia.edu/MDTHOMAS>